02 / 08 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

विदेश में ईश्वरीय सेवा के महत्त्व का अनुभव

➢➢ मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, महान आत्मा हूँ...

➳_ ➳ मैं विशेष आत्मा हूँ...

➳_ ➳ मैं बाबा के नैनों की नूर हूँ...

➳_ ➳ मैं बाबा का सर्विसेबुल बच्चा हूँ..

➳_ ➳ मैं इस जहां के लिए नूर, रौशनी, ज्योति हूँ...

→ मैं बापदादा के नैनों में समाई हुई आत्मा हूँ..

→ मैं आत्मा सदा बाप की लगन में मगन हूँ...

→ अपने नैनों से बापदादा को प्रत्यक्ष कर रही हूँ...

- मेरे नैनों में सिर्फ एक बाबा ही समाये हुए हैं..
- सिवाय बाप के कोई भी व्यक्ति व वस्तु को देख नहीं सकती...
- किसी में भी अंश मात्र भी रस दिखाई नहीं देता...
- मेरे लिए संसार असार हो गया है...
- मेरे लिए संसार मुर्दे के समान हो गया है...

▶ मैं आत्मा इच्छा मातरम् अविद्या हूँ..

▶ मैं सदा एक के रस में लीं हूँ...

▶ कोई भी हद की प्राप्ति, हद के आकर्षण मुझे आकर्षित नहीं कर सकते...

➢➢ मैं ब्रह्मा बाप की सहयोगी भुजा हूँ..

➳_ ➳ बाप दादा के कर्तव्य में मददगार हूँ...

➳_ ➳ बापदादा का शो करने के मैं निमित्त बन रही हूँ...

➳_ ➳ मैं विदेशों में भी ईश्वरीय सेवा के निमित्त बन रही हूँ...

➳_ ➳ सर्विस के नये नये साधनों द्वारा सेवा कर रही हूँ...

➳_ ➳ मैं उमंग उत्साह से सेवा कर रही हूँ..

➳_ ➳ विदेश की आवाज से भारत के सोये हुए कुम्भकरण भी जग रहे हैं..

→ विदेश द्वारा भारत में आवाज पहुँच रही है..

→ मैं विशेष आत्मा हूँ...

→ मनसा, वाचा, कर्मणा हर प्रकार से सेवा कर रही हूँ...

- मैं आत्मा संगम के महत्व को जान सेवा कर रही हूँ...
- मैं सदा सर्व रसों से न्यारी एक रस में मगन हूँ...
- मैं बाबा के नयनों का सितारा हूँ...

- मैं ज्योति स्वरुप आत्मा हूँ...
  - अपने इन स्वमानों का गहराई से अनुभव कर रही हूँ..